



सहजन की उन्नत खेती आज की आवश्यकता एवं महत्व

प्रदीप कुमार¹, यू एस शेखावत² और जे एस राणावत³

¹सहायक आचार्य, शस्य विज्ञान, टांटिया यूनिवर्सिटी- श्री गंगानगर, राजस्थान

²आचार्य एवं अधिष्ठाता, शस्य विज्ञान, टांटिया यूनिवर्सिटी- श्री गंगानगर, राजस्थान

³सहायक आचार्य, शस्य विज्ञान, टांटिया यूनिवर्सिटी- श्री गंगानगर, राजस्थान

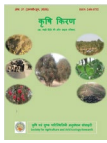
सारांश

मोरिंगा ऑलिफेरा एल. (सहजन) भारत में उगाई जाने वाली वृक्ष की प्रजाति हैं। सहजन की उत्तर-पश्चिमी मैदानी इलाकों, मध्य भारत और प्रायद्वीपीय भारत के शुष्क क्षेत्रों एवं गर्म जलवायु में अच्छी अनुकूलन क्षमता तथा बहुउद्देशीय उपयोग के कारण अपनी एक अलग पहचान हैं। इस लेख में हम सहजन के वंशावली विविधता, उपयोगिता, पोषण क्षमता, उन्नत किस्में, उत्पादन विधि, जल प्रबंधन तथा प्रमुख कीट एवं रोग प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानेंगे तथा सहजन की खेती से होने वाले किसानों को इसको उपयोग में लेने से होने वाले लाभ पर भी प्रकाश डालेंगे।

परिचय

सहजन भारत में उगाई जाने वाली एक वृक्षीय सब्जी की प्रमुख फसल हैं। इसको वैज्ञानिक भाषा में *मोरिंगा ओलीफेरा* जो पश्चिमी भारत का मूल निवासी है, के नाम से जाना जाता हैं। यह एक तेज़ी से बढ़ने वाली, मध्यम आकार की और सूखा-प्रतिरोधी प्रजाति है, जो भारत के दक्षिणी राज्यों में तमिलनाडु, केरला, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, पूर्वी राज्य बिहार और

पश्चिम बंगाल, पश्चिमी राज्य राजस्थान एवं गुजरात के शुष्क एवं आर्द्र प्रदेशों में उगाई जाती हैं। यह पेड़ पूरे विश्व में उष्णकटिबंधीय और उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में व्यापक रूप से उगाया और प्राकृतिक रूप से वितरित किया गया है। इसकी दूसरी प्रजाति *मोरिंगा कॉनसेनेसिस*, भारत के कुछ राज्यों में पाई जाती है और इसकी पत्तियाँ एवं पीले फूल खाने योग्य और औषधीय उपयोगों के लिए स्थानीय रूप से उपयोग में लाई जाती हैं। *मोरिंगा ऑलिफेरा*, जिसे स्थानीय रूप से सहजन, मुरंगई, सोनझा, सजना आदि कहा जाता है, को सबसे अच्छा और व्यापक रूप से वितरित सहजन प्रजाति माना जाता है। इसकी पोषण गुणवत्ता, विशेष रूप से फल, फूल, पत्ती और अन्य भागों में पायी जाती हैं। मोरिंगा एक छोटा एवं मध्यम ऊंचाई और एक वर्षीय एवं बहुवर्षीय पोधा हैं। इसकी ऊंचाई 10 से 12 मीटर वाला नाजुक तने वाला पोधा होता हैं। मोरिंगा की दो प्रकार की प्रजातियाँ होती हैं एक वर्षीय एवं बहुवर्षीय। तीव्र गति से वृद्धि एवं बढ़वार करने वाला पौधा है। इसका पौधा सूखा सहन करने वाला



एवं विविध पारिस्थितिक तंत्र और विभिन्न फसल पद्धतियों में लगने वाला होता है।

उपयोग एवं महत्व

मोरिंगा में वृहद और सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा मुख्यतः पत्तियों में पायी जाती है। प्रोटीन की उच्च मात्रा के कारण मोरिंगा का यही भाग सबसे अधिक उपयोग में लाया जाता है। ये पत्तियां एंटीऑक्सीडेंट तत्वों से भी भरपूर होती हैं, जिनमें आइसोथियोसाइनेट प्रमुख रूप से कैंसररोधी और एंटीबायोटिक गुणों के वाहक के रूप में जाने जाते हैं। इसकी पत्तियों में टैनिन, लेसिथिन और प्रोटीएज़ अवरोधक जैसे पोषक तत्वों की मात्रा नगण्य होती है, इसी कारण इन्हें पूर्ण रूप से खाया जा सकता है। इसके अलावा, इनमें आवश्यक अमीनो अम्लों का संतुलित मिश्रण होता है और ये विटामिन ए, सी और एंटीऑक्सीडेंट का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। अतः, इस पौधे में एक स्वस्थ आहार के लिए आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों की आपूर्ति करने की क्षमता है। इस प्रकार, मोरिंगा का पोषण स्तर अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें अन्य खाद्य पदार्थों की तुलना में अधिक मात्रा में सभी मूल्यवान अमीनो अम्ल, विटामिन और खनिज मौजूद होते हैं, जिन्हें आमतौर पर उनके पोषण गुणों के आधार पर पौष्टिक माना जाता है। मोरिंगा

कुपोषण, एनीमिया और विटामिन एवं पोषक तत्वों की कमी से संबंधित बाल अंधत्व जैसी कई बीमारियों को रोकने के लिए कम उत्पादन लागत वाला एक उत्कृष्ट संसाधन साबित हो रहा है। इस संदर्भ में, मोरिंगा की पत्तियों की रासायनिक संरचना, पोषण मूल्य और एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि तथा उनकी जैव उपलब्धता का निर्धारण करना है ताकि संतुलित आहार में उनके सेवन के लिए एक ठोस सिफारिश की जा सके।

सहजन का सम्पूर्ण भाग जैसे पत्तियाँ, फली, तना छाल, जड़ एवं फूल, बीज से निकाले गए तेल एवं हरे चारे में बहुत ही उपयोगी होता है। इसकी बहुउद्देशीय प्रकृति मनुष्य एवं पशुओं दोनों के लिए बहुत उपयोगी होती है। इसके पौधे के सभी भाग का खाद्य मूल्य होता है। इसकी पत्तियों का उपयोग हरा सलाद, सब्जी, दाल करी, पराठा, पकोड़ा, अंडा रोल, आलू भुजी, फली का उपयोग आचार, सूप, दाल करी, आदि में उपयोग किया जाता है। इसका इसकी पत्तियों का उपयोग पशुओं के लिए हरे चारे के लिए भी करते हैं। पशु इसको अकेले सूखे चारे को बड़े चाव से खाते हैं। इसका उपयोग सब्जी बनाने के अलावा दवाईयां एवं बीज से निकले तेल का उपयोग इत्र में होता है। इसकी सूखी एवं हरी पत्तियों

का उपयोग का खाद बनाने में भी करते हैं। यह विटामिन A एवं C से भरपूर तथा लोह एवं कैल्शियम तत्व भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके उपयोग से त्वचा स्वस्थ ही नहीं वरन कोमल रखने के साथ साथ ठण्ड के प्रतिरोधक क्षमता एवं संक्रमण से बचाती हैं। इसकी पत्तियों में संतरा से 7 गुना अधिक विटामिन C, दूध से 17 गुना अधिक कैल्शियम, गाजर से 9 गुना अधिक विटामिन A, केले से 15 गुना अधिक पोटेशियम एवं दूध से 2 गुना अधिक प्रोटीन पाया जाता है। मोरिंगा को पोषक मूल्य का पॉवर हाउस भी कहा जाता है। मोरिंगा ओलिफेरा में प्रोटीन, खनिज, आहार फाइबर और फोलेट की मात्रा और कम लिपिड सामग्री के कारण, मानव भोजन के लिए एक कार्यात्मक घटक के रूप में उपयोग किए जाने की क्षमता दिखाई देती है। यह कैल्शियम, आयरन, कॉपर और पोटेशियम का भी स्रोत है, और इन खनिजों की उच्च जैव उपलब्धता भी है। इसलिए, यह भोजन को समृद्ध करने का एक संभावित स्रोत है। इसके अलावा, इस अध्ययन में यह प्रदर्शित किया गया कि मोरिंगा ओलिफेरा की पत्तियों में फेनोलिक यौगिकों और एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि की सांद्रता एंटीऑक्सीडेंट सप्लीमेंट

के संभावित स्रोत के रूप में विचार करने के लिए पर्याप्त है। सामान्य तौर पर, इसमें स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए आयरन की कमी की समस्याओं से निपटने और ऑस्टियोपोरोसिस और हृदय संबंधी विकारों सहित कई बीमारियों को रोकने के लिए आयरन की बेहतर मात्रा प्रदान करने की क्षमता हो सकती है

मृदा एवं जलवायु

इसकी खेती वैसे तो सभी प्रकार की मृदा में की जा सकती है परंतु अच्छी खेती के लिए उत्तम जल निकास वाली चिकनी दोमट से लेकर बलुई दोमट मृदा उपयोगी हैं। इसकी खेती जलमग्न मृदा में नहीं की जा सकती है। इसकी खेती के लिए 6.5 से 8.5 पी.एच. मान वाली मृदा अच्छी हैं। इसकी वृद्धि एवं विकास के लिए गर्म एवं आर्द्रतायुक्त जलवायु तथा अच्छे एवं विकसित फूल के लिए शुष्क जलवायु अच्छी होती हैं। इसमें 25 से 30 डिग्री सेंटीग्रेट तापमान फूल विकास के लिए अच्छा है।





मोरिंगा का पोषक मूल्य

तालिका 1. सूखी पत्तियों का संगठन (प्रति 100 ग्राम खाद्य)

क्र. स.	पौषक तत्व	पत्तियों में
1	नमी	7.23 ग्रा.
2	प्रोटीन	25.30 ग्रा.
3	लिपिड	5.75 ग्रा.
4	राख	9.95 ग्रा.
5	कार्बोहाइड्रेट	29.80 ग्रा.
6	रेशे	24.97 ग्रा.
7	बोरॉन	3.54 मि.ग्रा.
8	केल्सियम	1.48 मि.ग्रा.
9	कॉप्पर	0.45 मि.ग्रा.
10	लौह	25.14 मि.ग्रा.
11	पोटैसियम	1.75 मि.ग्रा.
12	मेग्नीशियम	301.11 मि.ग्रा.
13	मैंगनीज	7.21 मि.ग्रा.
14	सोडियम	133.11 मि.ग्रा.
15	फॉस्फोरस	352.39 मि.ग्रा.
16	सल्फर	982.49 मि.ग्रा.
17	जिंक	2.04 मि.ग्रा.

स्त्रोत: पलनवीर और अन्य 2022

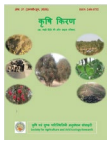
कृषि क्रियाएं

प्रसारण एवं लगाने की विधियाँ

इसकी प्रसारण की दो विधियाँ हैं 1. सीधे खेत में बीज की बुवाई करना 2. नर्सरी में पौध तैयार द्वारा खेत में रोपाई करना। मोरिंगा की बहुवर्षीय किस्म को नर्सरी में पौध तैयार करके लगाया जा सकता है।

(1.) सीधे खेत में बीज द्वारा बुवाई: सीधे खेत में बुवाई के लिए 1x1x1 मीटर आकार का

गड्ढा बनायें। गड्ढों को 10 से 15 किया गोबर की खाद या कम्पोस्ट से मई-जून के महीने में भर दे या खेत की तैयारी करते समय अंतिम जुताई के समय 20 टन गोबर की खाद या कम्पोस्ट भूमि में मिलाएं। सीधे खेल में बुवाई के लिए डिबलर की सहायता से 2-3 बीज प्रति गड्ढे में 5-6 सेमी की गहराई पर डालें। इसमें पौधे से पौधे की दूरी 2.0 मीटर और लाइन से लाइन की दूरी 2.5 मीटर रखते हैं। सीधे खेत



में बुवाई के लिए प्रति हेक्टेयर 600-650 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। इस विधि से बुवाई करने से 10 से 12 दिन में बीज का अंकुरण हो जाता है।

(ब) नर्सरी में पौध तैयार करना:- नर्सरी में पौध तैयार करने के लिए बालू, गोबर की खाद और बाग की मिट्टी की आवश्यकता होती है। उपरोक्त सामग्री को 6 इंच उठी नर्सरी पर अच्छी तरह मिलाकर 1-1.5 इंच की गहराई पर बीज डाल है और रोज शाम को हजार या स्प्रींकलर से बीज अंकुरण तक सिचाई करते रहे। बीज अंकुरण के बाद 3 दिन बाद सिचाई करें। यदि आप पोलीवेग में पौध तैयार करना चाहते हैं तब पोलीवेग (15 सेमी x 10 सेमी आकार की) की आवश्यकता पड़ेगी। पोलीवेग को 2 भाग मृदा, 1 भाग बालू, 1 भाग गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद से भर है। उसके बाद 2 सेमी की गहराई पर 3-4 बीज पोलीवेग में डाल दें और हजार या स्प्रींकलर से शाम की समय रोज हल्की सिचाई करते रहे। वैसे इस विधि से पौध तैयार करने से 5 से 10 दिन में बीज का अंकुरण हो जाता है। बीज का अंकुरण बीज की आयु एवं पूर्व उपचार पर निर्भर करता है। नर्सरी में पौध तैयार करने के लिए 650-750 ग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। बीज के अंकुरण के 10-15 दिन बाद थिनिंग कर देना चाहिए प्रत्येक पोलीवेग में 1-2 पौधा ही रखना चाहिए। जब पौधे 40-50 सेमी ऊंचाई के हो जाएँ तब खेत में रोपाई कर देना चाहिए। पौधों को खेत में

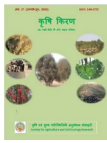
45x45x45 सेमी आकार के बने गड्डों 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर रोपाई कर देना चाहिए। खेत में रोपाई जुलाई से अगस्त के महीने में करना उचित रहता है।

प्रमुख प्रजातियाँ

मोरिंगा की प्रमुख उन्नत प्रजातियाँ PKM-1, PKM-2, KM-1, Rohit-1, Coimbatore-1 और Bhagya (KDM-1)

PKM-1 वार्षिक मोरिंगा: इसके फल मांसल और स्वादिष्ट होते हैं। यह बुवाई के 5-6 महीने में फूल आना शुरू हो जाते हैं और 7-8 महीने में फलियाँ तुड़ाई योग्य हो जाती हैं। यदि उचित प्रबंधन हो तब पौधे एक वर्ष में 4-6 मीटर ऊंचाई तक हो जाते और 6-12 प्राथमिक शाखाएँ निकल आती हैं। इस प्रजाति में लगभग 25-150 फूल प्रति क्लस्टर के समूह में होते हैं। जिससे एक फली आमतौर पर विकसित होते हैं। इसकी फली 6.3 सेमी व्यास के साथ 75 सेमी लंबी तक होती है और 70% मांसल के साथ 150 ग्राम बजन होता है। इससे औसतन उपज 220 फली प्रति पौधा तक होती हैं और अनुमानित उपज लगभग 50-60 टन प्रति हेक्टेयर हैं फली फूलने के बाद 65 दिन बाद खाने योग्य हो जाती हैं। इस किस्म को रैटूनिंग से फसल के रूप में 3-4 वर्ष तक बनाये रखा जाता है। प्रत्येक वर्ष के बाद पौधों को जमीनी स्तर से 1 मीटर नीचे या ऊपर से काटना चाहिए।

PKM-2 वार्षिक मोरिंगा: यह किस्म बीजों द्वारा सीधे खेत में लगाने के लिए उपयुक्त



है। यह पौध रोपाई के छः महीने बाद फल देने लगती हैं और अन्तर्वर्ती फसल पद्धति के लिए भी बहुत ही उपयुक्त प्रजाति हैं। इसकी फली लगभग 126 सेमी लंबी होती हैं और फली का व्यास 8.3 सेमी होता हैं। इसमें 70 प्रतिशत मांसल के साथ साथ फली का वजन 280 ग्राम तक होता है। फली कम बीज वाली एवं स्वादिष्ट होती है प्रति पौधा फली की औसत संख्या 220 फली प्रति पौधा प्रति वर्ष तक होती हैं। इसकी पैदावार 98 टन प्रति हेक्टेयर तक होती हैं। रैटूनिंग फसल के रूप में इसे 3 वर्ष तक ले सकते हैं। यह अच्छे जल निकास वाली रेतीली दोमट से लेकर दोमट मिट्टी तक विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता हैं।

KM-1 वार्षिक मोरिंगा: यह एक वर्षीय सहजन है जिसे बीजो द्वारा प्रसारण किया जाता है। यह 400-500 फली प्रति पौधा प्रति वर्ष तक देती है। इसकी फली 25-30 सेमी तक लंबी होती है। इसकी कटाई आसानी से की जा सकती है। क्योंकि पौधे झाड़ियों की तरह होते हैं। पहली कटाई के बाद पौधों को जमीन से 1 मीटर ऊपर छोड़कर काट देने से रैटूनिंग फसल ले सकते हैं। रैटूनिंग के रूप में 2-3 वर्ष तक ले सकते हैं।

धनराज: यह एक वार्षिक सहजन है जो बीजों द्वारा प्रसारित किया जाता है।

Co-1: इस प्रजाति की फली की लम्बाई 25 से 35 सेमी होती हैं। इसकी फली गहरी हरी एवं स्वादिष्ट होती है। इसके प्रति पौधे से उपज

250 से 375 फली तक प्राप्त होती है। पौधा को रैटूनिंग के लिए छोड़ दिया जाय तो यह 3 से 4 वर्ष तक उपज देती है।

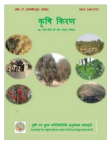
रोहित: इससे प्रथम बार उपज बुवाई के 4 से 6 माह में उपज देने लगती है। यह व्यसायक उपज 10 वर्ष तक देती हैं। प्रति वर्ष में 2 बार उपज प्राप्त कर सकते हैं। इसकी फली गहरी हरे रंग की 45 से 60 सेमी लम्बी मांसल, मुलायम, स्वादिष्ट एवं अच्छे गुणवक्ता वाली होती है। इसके एक पौधे से लगभग 40-125 फली और 3 से 10 किग्रा. वर्ष तक उपज देती है। इसकी पैदावार और गुणवक्ता मृदा प्रकार, जलवायु सिंचाई का प्रबंधन और पौध अंतरण और बाजार भाव पर निर्भर करती है।

अंतरवर्ती शस्य क्रियाए और खाद एवं उर्वरक

जब पौधे 70 सेमी से 75 सेमी ऊंचाई के हो जाएँ तब पौधों से अनावश्यक शाखाओं को निकाल देना चाहिए। इसके बाद रोपाई के 3 महीने बाद 100 ग्राम यूरिया, 100 ग्राम सुपर फॉस्फेट और 50 ग्राम पोटाश की मात्रा प्रति पौधा डालने के बाद सिंचाई कर देना चाहिए और दूसरी मात्रा 6 महीने के बाद 100 ग्राम यूरिया टॉप ड्रेसिंग के रूप में डालना चाहिए।

जल प्रबंधन

सहजन का पौधा काफी नाजुक एवं मुलायम होला है। इसको अधिक मात्रा में सिंचाई देने की आवश्यकता नहीं होती हैं। शुष्क क्षेत्रों में प्रथम दो महीने तक सिंचाई की लगातार आवश्यकता होती हैं और उसके बाद आवश्यकता पड़ने पर सिंचाई करते हैं। जल



की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता होने पर 15 दिन में दो बार सिंचाई करने पर फलियों जल्दी प्राप्त होने लगती है जहाँ एक समान वर्षा वाले क्षेत्रों में यह उपज लगातार प्राप्त होती हैं। इस फसल को शुष्क मौसम में 15 दिन में एक बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। जब इसकी खेती एक व्यवसाय रूप से करना चाहते हैं तब इसमें सिंचाई के लिए द्विप सिंचाई उचित रहती है। गर्मियों के मौसम में 12-16 लीटर पानी प्रति दिन प्रति पौधा दिया जाता है और सर्दियों में यह मात्रा इसकी आधी रह जाती है। यदि पर्याप्त मात्रा में सिंचाई उपलब्ध नहीं है तब जीवन पर्यन्त सिंचाई का प्रयोग 15 दिन में शुष्क अवस्था में दे सकते हैं।

कटाई छंटाई

शाखाओं को बढ़ावा देने, पैदावार बढ़ाने और कटाई की सुविधा के लिए सहजन की छंटाई की जानी चाहिए। अगर मुख्य तने को काटे बिना छोड़ दिया जाए तो, पेड़ सीधा और लंबा बढ़ेगा और उत्पादन कम होगा। आमतौर पर रोपण के 3 से 5 महीने बाद पेड़ 0.6 से 1 मीटर ऊँचा हो जाए तो मुख्य तने की कटाई क्र देना चाहिए। किसानों को प्रति वर्ष कम से कम 2 छंटाई करनी चाहिए।

मोरिंगा के रोग और प्रबंधन

भूरी पत्ती का धब्बा: रोग के नियंत्रण के लिए कार्बेन्डाजिम, डिफोलटन, मैकोजेब, मानेव,

जिनेब, मेटिरम का पतियों पर छिड़काव प्रभावी है।

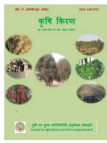
अल्टरनेरिया पत्ती का धब्बा: रोग की शुरुआत का पता लगाना कठिन है। एक बार धब्बे दिखाई देने के बाद उपचार करने में अक्सर बहुत देर हो जाती है और पतियों का गिरना अपरिहार्य हो जाता है। खरपतवारों को निकाल देना चाहिए जो अक्सर बीमारियों का कारण बनते हैं। कवकीय संक्रमणों हमलों के लक्षणों के लिए पतियों और नई टहनियों का निरीक्षण किया जाना चाहिए। रोग को नियंत्रित करने के लिए नीम के बीज के अर्क का पौधों पर छिड़काव किया जाता है। पत्ती धब्बों के नियंत्रण के लिए मैकोजेब मानेब, जिनेब, मेटिरम जैसे फफूंदनाशकों का छिड़काव प्रभावी है।

पाउडरी मिल्ड्यू: वेटेवल सल्फर 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करने से बेहतर नियंत्रण होता है।

जड़ सड़ना: पेड़ों के टूटे हुए हिस्सों को ठीक से काटा जाना चाहिए और छाल में घाव किया जाना चाहिए, और कांटों को खुरच कर बोर्डों मिश्रण से संरक्षित किया जाना चाहिए। कार्बेन्डाजिम या थायोफेनेट मिथाइल या क्लोरोथालोनिल का छिड़काव प्रभावी नियंत्रण देता है।

मोरिंगा के प्रमुख कीट एवं प्रबंधन

बड़ मिज़: प्यूपा को बाहर निकालने और मारने के लिए पेड़ों के चारों ओर जुताई करें। इन लट सहित क्षतिग्रस्त कलियों को इकट्ठा करके



नष्ट कर दें। एक लाइट ट्रेप प्रति हेक्टेयर की दर से लगाएं। कीटनाशक जैसे कार्बेरिल 50 डब्ल्यूपी 1 ग्राम प्रति लीटर या मैलाथियान 50 ईसी 2 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

पत्ती काटने वाला कीट: 1प्रकाश जाल / हेक्टेयर की दर से स्थापित करें खेत में सहजन की फसल की ऊंचाई से ऊपर पक्षियों के बैठने की व्यवस्था का प्रावधान करें ताकि पक्षी वहां जाकर उनका शिकार कर सकें। मकड़ियों नये फलश पर बड़ी संख्या में निवास करती हुई पाई जाती है जो बढ़ती हुई कीट पर प्राकृतिक नियंत्रण रखती हैं। कीटनाशक जैसे कार्बेरिल 50 डब्ल्यूपी 1 ग्राम प्रति लीटर या मैलाथियान 50 ईसी 2 मिली प्रति लीटर पानी या फेनथियान (0.05%) का छिड़काव करें।

बालों वाली लट: अंडे के समूह और लट को इकट्ठा करें और नष्ट करें बारिश के तुरंत बाद वयस्कों को आकर्षित करने और मारने के लिए प्रति हेक्टेयर की दर से प्रकाश जाल लगाए। तने पर एकत्रित सूड़ी को मारने के लिए जलती हुई मशाल का प्रयोग करें। स्प्रे फॉर्स @ 25 ग्राम/लीटर या कार्बेरिल 50 डब्ल्यूपी @ 2 ग्राम/लीटर का उपयोग किया जाता है।

तना छेदक: सभी जालदार सामग्री और मल को साफ करें। छिद्रों को क्लोरोफॉर्म, फॉर्मलिन या

पेट्रोल जैसे फ्यूमिगेंट्स में भिगोए रुई से बंद करें और मिट्टी से सील करें।

उपज:

विकास के आधार पर, रोपण के 6 से 12 महीने बाद तक पत्तियों की कटाई की जाती हैं। पानी दिए गए पेड़ों की कटाई करते हैं। पहले शाखाओं को तोड़कर पत्तियां तोड़ें। युवा शूट टिप्स की कटाई करने से पार्श्वशाखाओं के विकास को बढ़ावा मिलेगा। आगामी फसल से पहले नए अंकुर और शाखाएँ विकसित होने दें। बीच से काटी गई शाखाओं की पत्तियाँ सिरे पर स्थित शाखाओं की पत्तियों की तुलना में कम कड़वी और नरम होती हैं। यदि पौधा को कम दूरी और उच्च घनत्व पर उगाया जाता है, तो पौधों को जमीन से लगभग 10-20 सेमी ऊपर से काटें। सूखे पत्तों का पाउडर बनाने के लिए ये पत्तियाँ अधिक उपयुक्त होती हैं। कटी हुई पत्तियों को बंडलों में बांधें और उन्हें बनाए रखने के लिए छाया में रखें। ताजी सब्जियों के लिए जब फलियाँ छोटी और कोमल हो तब उनकी कटाई करें। चाय बनाने के लिए ताजे या सूखे फूलों का उपयोग किया जाता है।